शोध-सारांश

वर्तमान समय मेंमुस्लिम समाज की स्त्रियाँबहुत प्रकार की समस्याओं से घिरी हुई हैं। शरिया द्वारा उन्हें जो अधिकार दिए गये थे, वे अधिकार पुरुषों ने कब्ज़ा लिए हैं। शरिया के द्वारा जो बराबरी का रिश्ता स्त्री-पुरुष के मध्य स्थापित किया गया था वह आज लुप्त हो चुका है। अनेकों कर्तव्यों और जिम्मेदारियों के साथ साथ स्त्रियों को बहुत से अधिकार दिए गये थे जिनसे कि वे सम्मान के साथ जीवन यापन कर सकें। परन्तु आधुनिक संदर्भ में देखें तो इन अधिकारों का कोई भी महत्त्व नहीं रह गया है क्योंकि पुरुष शरिया को अपने अनुसार लागू करते हैं। पुरुषों ने स्त्री को आज चारदीवारी तक ही सीमित कर दिया है ताकि वह स्वतंत्र न हो सके और सदैव उन्हीं के अधीन बनी रहे। शरिया द्वारा दिए हुए अधिकारों के प्रति नारी को अब स्वयं जागरूक होना होगा। शिक्षित होकर ही स्त्रियाँ अपने छीने हुए अधिकार दोबारा प्राप्त कर सकती हैं। तलाक के अधिकार का दुरपयोग, स्त्रियों के मेहर के अधिकार को न देना, संपति पर अधिकार के लिए लड़कियों का 'कुरान' से विवाह करवा देना, हलाला निकाह, स्त्री की गवाही को पुरुष की गवाही के मुकाबले आधा मानना, पर्दे की बाध्यता, अन्य धर्म में विवाह के लिए स्त्रियों को मनाही, मताधिकार से वंचित, मस्जिद न जाने की इजाज़त न होना, मानसिक और शारीरिक विकृति लाने वाली कुप्रथाओं का प्रचलन, धर्म प्रमुख बनने में पुरुषों का वर्चस्व और गढ़ी हुई हदीसों द्वारा स्त्री को अपने अनुरूप ढालना आदि मुस्लिम समाज की आज की सबसे बड़ी समस्याएं हैं।

कुछ मुस्लिम सम्प्रदायों में ऐसी कुप्रथाओं का चलन है, जिससे कि स्त्रियों को शारीरिक और मानसिक रूप से पंगु बना दिया जाता है। इस प्रकार की कुप्रथाओं को धर्म की अनिवार्यता के रूप में पेश किया जाता है। अफ्रीका के 27 देशों के अलावा खाड़ी के कुछ देशों में एक ऐसी ही प्रथा प्रचलित है, जिसे 'स्त्री सुन्नत' या 'जनाना खतना' के नाम से जाना जाता है। इसे अंग्रेजी में फीमेल जेनिटल म्यूटीलेशन कहते हैं। जयश्री रॉय ने अपने उपन्यास 'हव्वा की बेटियों की दास्तान-दर्दजा'के माध्यम से इस वीभत्स और भीषण प्रक्रिया के बारे में बताया है। इस कुप्रथा की शुरुआत मिश्र से मानी जाती है। हानिकारक सामाजिक

प्रथाओं के विशेषज्ञ गेरी मैकी(GERRY MACKIE)बताते हैं कि त्वचा की सिलाई(सुन्नत प्रथा)का आरम्भ मिरोइट सभ्यता और पोलिगिनी राजशाही से होता है। यह इस्लाम से उदय के पहले की प्रथा है। मिश्र में मिले एक ताबूत पर इस प्रथा के संबंध में लिखे हुए कुछ संकेत मिलते हैं। यह प्रथा आजकल इथिओपिया, इरिट्रिया, सोमालिया और सूडान आदि देशों में प्रचलित है। इस कुप्रथा के कारण बहुत सी मासूम बच्चियां अपना अमूल्य जीवन खो देती हैं। इस कुप्रथा के कारण स्त्रियों को बहुत सी जानलेवा बीमारियाँ हो जाती हैं, जैसे कि कैंसर, एड्स, हेपेटाइटिस B और C, न्यूरोमा(एक प्रकार का ट्यूमर), गुर्दा सम्बन्धी क्षति और गुर्दे खराब होने की सम्भावना, गर्भाशय में क्षति और बांझपन, स्थायी रूप से मूत्राशय का संक्रमण आदि। लेखिका ने उपन्यास के माध्यम से इस कुप्रथा की व्यापकता को सामने रखा है। इस कुप्रथा के कारण स्त्रियों का जीवन किस प्रकार भयावह हो जाता है, इस बात को भी हम उपन्यास के माध्यम से आसानी से समझ सकते हैं। उपन्यास की मुख्य पात्र माहरा यह प्रथा की प्रासंगिकता को समझने में असमर्थ होती है। वह बहुत कोशिश के बाद भी अपने आप को इससे बचा नहीं पाती। अपनी छोटी बहन को वह इस प्रथा के कारण खो देती है। वह इस बात के लिए दृढ़निश्चित है कि किसी भी कीमत पर अपनी पुत्री को इस प्रथा की बलि नही चढ़ने देगी। अपने पति, परिवार और पूरे समाज के विरुद्धवह अपनी पुत्री के लिएढाल बनकर खड़ी हो जाती है। अंततः वह अपनीप्राण देकर अपनी पुत्री को बचा लेती है तथा उपन्यास के अन्त में एक उम्मीद की रोशनी छोड़ जाती है कि अब इस प्रथा का अंत नजदीक ही है। उपन्यास भाषायी स्तर पर भी सफल रहा है। लेखिका ने बहुत सी संवेदनशील मुद्दे को पूरे समाज के सामने रखा है। बहुत सी विश्वस्तरीयसंस्थाएँ भी इस प्रथा के विरोध में कार्यरत हैं। इस प्रथा को जल्द ही समाप्त करने के लिए बहुत से महत्त्वपूर्ण कार्य किए जा रहे हैं। इस प्रथा की कोई धार्मिक वैधता नहीं है।

Short Research Note Summary

Presently, Muslim women are surrounded with lot many problems. The rights given to them, in Shariyat, are usurped by males. The equal status, of men and women, given by Shariyat is disappearing. Women are given lot many rights to perform lot many roles and responsibilities, so that they can live a dignified life. But in modern context, these rights have no meaning because males administer them as per their own convenience. Males have confined the women to the four walls of house so that they never get freedom and always remain under their (males) authority. Women have to be aware on their own rights, as given under Shariyat, and they can claim their rights after getting educated. There are lot many problems, in Muslim community, like misuse of the right to divorce, not giving the right to women to get 'Meher',getting women married to 'Quran' in order to claim their property rights, 'Halala' marriage, considering the validity of women's testimony half in comparison to their males counterparts, restriction in form of 'Parda', restrict women to get married in other religion, deprived them of their right to vote, not allowing them to go to 'Masjid', bad practices that being psychological and physical deformity, males' preference in becoming religious leader, practice 'Hadis' to keep them under males' control etc. Some of Muslim communities follow these bad practices that make women mentally and physically handicapped. Such types of bad practices are presented as the necessity of

religion. Apart from 27 African nation, these practices are in vogue in some gulf countries, where it is known as ‘Sunnat’ and ‘JananaKhatna’, that is call ‘Female Genital Mutilation’. Jayshri Roy has depicted about this detested and inhuman procedure, through her book ‘Havvakibetiyonkidastan-Dardja”. It is believed that this practice was started in Egypt. Detrimental practices expert Gerry Mackie tells that the practice of stitching of skin(Sunnat),was started in Mirroit civilization and Polygony dynasty, was followed before the rise of Islam. Some evidences of it found in one of the coffins in Egypt. This practice in now followed in countries like Ethiopia,Eritriya, Somalia, Sudan etc.Because of this cruel practice lot many innocent girls lost their lives and lot many women developed diseases like cancer, AIDS, Hepatitis B and C, Nuroma (a sort of tumor),Kidney related diseases and kidney failure, damage to womb and incapacitated women to give birth ,problems in urination etc. The writer has presented this detrimental practice through a novel that can help us in understanding how miserable lives of women become due of this practice. The main character of this novel is Mahra, who is unable to understand the value of this practice. Even after trying hard ,she was unable to defend herself from this bad practice and also lose her younger sister. She decided firmly that her daughter will never meet the same fate. She stands against her husband, family and society, to save daughter. At last, she saves her daughter’s lives after sacrificing her own life and leaves a ray of hope,at the end of the novel,that the end of this bad practice is near. This novel is successful at the language level. The writer has

presented the sensitive issues of the entire society. Lot many renowned organizations are working against this bad practice and lot many important works are undertaken to end this bad practice. This practice does not have any religion sanction.